यूजीसी केयर लिस्ट में शामिल
अप्रैल–जून 2021
वर्ष 11, अंक–22

मूल्य–100/-
ISSN NO. 2320-5733

समसामयिक सृजन

समकालीन साहित्य, शिक्षा एवं संस्कृति का संगम

समसामयिक सृजन

साहित्य, शिक्षा और संस्कृति का संगम

संरक्षक
डॉ. प्रभात कुमार

प्रधान संपादक एवं परामर्श
डॉ. रमा

संपादक
डॉ. महेन्द्र प्रजापति

संपादन सहयोग
रीमा प्रजापति

आवरण चित्र
अंकीता चौहान

ले-आउट
हर्ष कंप्यूटर्स

संपादकीय कार्यालय
मकान नं. 189, ब्लॉक-एच
विकासपुरी, नई दिल्ली-110018

पत्राचार
एफ-114, तृतीय तल, SLF, वेद विहार
नियर : शंकर विहार ऑटो स्टैंड, लोनी
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201102

सदस्यता
आजीवन : 5000/- रुपए
संपर्क : 9871907081
वेबसाइट : www.samsamyiksrijan.com
Email : samsamyik.srijan@gmail.com

प्रकाशन एवं मुद्रण
हरिन्द्र तिवारी
हंस प्रकाशन, दिल्ली
मो. : 7217610640, 9868561340
ईमेल : hansprakashan88@gmail.com
बेवसाइट : www.hansprakashan.com

पृ.सं.

- **रमेश पोखरियाल निशंक...** : *प्रो. रमा* 3
- **साहित्य का सामर्थ्य** : *सत्यकेतु सांकृत* 5
- **'कब होगी वह भोर...** : *डॉ. जी. वी. रत्नाकर* 7
- **अभिशप्त जीवन 'दोहरा...** : *वंदना एस.* 9
- **शिक्षक शिक्षा का विकास...** : *संजय यादव* 15
- **गोरख पांडेय की कविता...** : *प्रीति प्रसाद* 18
- **ज्ञान प्रकाश विवेक के उपन्यास...** : *इंदु रानी* 21
- **हिंदी दलित कथा साहित्य...** : *एल. अनिल* 24
- **'स्वर्ग की अदालत' का नाटक...** : *तितिक्षा जी वसावा* 27
- **'कुमारजीव' : जीवन के ध्येय...** : *कुमार सौरभ* 30
- **भारतीय समाज में तृतीय लिंगी...** : *हेमंत यादव* 33
- **'रागदरबारी' की भाषा में...** : *डॉ. शिप्रा श्रीवास्तव 'सागर'* 36
- **मितभाषण : भावनाओं के...** : *मुनि कुमार श्रमण* 39
- **एक बहुआयामी व्यक्तित्व...** : *डॉ. सुमन फुलारा* 43
- **साहित्य और विभाजन : संदर्भ...** : *निधि वर्मा* 45
- **नासिरा शर्मा के कथा साहित्य...** : *अजय कुमार* 48
- **मृणाल पाण्डे के सांस्कृतिक...** : *आलोक कुमार तिवारी* 52
- **माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों...** : *अमित कुमार दूबे* 55
- **मीनाक्षी स्वामी के उपन्यासों...** : *विजय कुमार पाल* 58
- **'हरित मानव की तलाश'** : *बिजीना टी.* 62
- **विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की...** : *डॉ. जगदीश* 65
- **महादेवी वर्मा का नारी चिंतन...** : *डॉ. सुनीता शर्मा* 69
- **अज्ञेय के कथा-साहित्य में...** : *डॉ. सुरेद्र शर्मा* 72
- **एकांत के आख्यान को रचती...** : *कार्तिक राय* 76
- **विनोबा भावे जी के शिक्षा...** : *डॉ. गिरीश कुमार द्विवेदी* 79
- **मुंशी प्रेमचंद : आदर्शवाद से...** : *जितेंद्र शर्मा* 82
- **उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य...** : *सोनी यादव* 85
- **हिंदी साहित्य में रसानुभूति की...** : *विशाल मिश्रा* 89
- **चित्रा मुद्गल की कहानियों...** : *कृपा शंकर* 92
- **अमरकांत के कथा साहित्य...** : *अशोक कुमार यादव* 95
- **काशीनाथ सिंह की उपन्यासिक...** : *देवव्रत यादव* 98
- **सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य...** : *ललिता देवी* 101
- **प्राथमिक शिक्षा में शिक्षा के...** : *पीयूष कांती* 104
- **समाज के उन्नयन में अल्पसंख्यक...** : *अजीत कुमार मिश्र* 108
- **मंगलेश डबराल के काव्य में...** : *सुरेश कुमार मिश्र* 110
- **बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की...** : *डॉ. सरोज राय* 112
- **रामनरेश त्रिपाठीजी के सृजन...** : *डॉ. अवनीश कुमार* 116
- **ललित निबंधों में समाज की...** : प्रदीप कुमार तिवारी 119

स्वामी, प्रकाशक, सम्पादक, मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी : *डॉ. महेन्द्र प्रजापति द्वारा एच.-ब्लॉक, मकान नं. 189, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से प्रकाशित।*

- **'थर्ड जेंडर' एवं... :** *प्रियंका कलिता* 123
- **बद्री सिंह भाटिया के... :** *कुसुम देवी* 125
- **मध्यवर्ग के परिप्रेक्ष्य में... :** *बलजिंदर कुमार* 128
- **धार्मिक शोषण का... :** *एन आर सेतु लक्ष्मी* 132
- **पति-पत्नी के अहं के... :** *स्नेहा शर्मा* 135
- **नागार्जुन के साहित्यिक... :** *संदीप कुमार* 138
- **बाँसवाड़ा... :** *डॉ. सौरभ त्यागी-सुरभी दोषी* 140
- **सम्मेलन पत्रिका का... :** *त्रिभुवन गिरि* 145
- **बाणभट्ट की आत्मकथा का... :** *चंदन कुमार* 148
- **अमरकांत कीं... :** *अजीत कुमार पटेल* 151
- **रामविलास शर्मा के... :** *डॉ. अजीत सिंह* 154
- **चित्रा मुद्गल के... :** *डॉ. अमिता तिवारी* 158
- **विवेकी राय का कविता... :** *अनुपमा तिवारी* 161
- **वर्तमान समय में... :** *डॉ. आशीष यादव* 164
- **भारतेंदुयुगीन कविता... :** *डॉ. भास्कर लाल कर्ण* 167
- **भोजपुरी बारहमासा... :** *भव्या कुमारी* 172
- **नारी मुक्ति का... :** *डॉ. बीना जैन* 175
- **हिंदी पत्रकारिता... :** *डॉ. चयनिका उनियाल* 178
- **लोकमानस के अनूठे... :** *डॉ. छोटू राम मीणा* 181
- **महामारी कोविड-19 के... :** *डॉ. ऋषिपाल-डॉ. ज्योति श्योराण-डॉ. जयपाल मेहरा डॉ. निधि जैन-सुश्री पल्लवी* *185*
- **योग : विश्व... :** *डॉ. दयाशंकर सिंह यादव* 189
- **पूना पैक्ट की... :** *डॉ. दीपक कुमार गुप्ता* 192
- **लोकमान्य तिलक... :** *डॉ. राजेश कुमार शर्मा* 195
- **मानवतावादी व महिला... :** *डॉ. संगीता शर्मा* 200
- **वर्तमान परिपेक्ष्य में... :** *डॉ. शारदा देवी* 204
- **संस्कृति के वाहक... :** *डॉ. भारती बतरा* 208
- **हरियाणवी सिनेमा में... :** *डॉ. जयपाल मेहरा* 211
- **महादेवी वर्मा की... :** *डॉ. गीता पांडेय* 214
- **'मानस' में उपलब्ध... :** *डॉ. गीता कौशिक* 218
- **साहित्य संबंधी प्रेमचंद... :** *ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह* 221
- **सावित्री बाई फुले... :** *डॉ. हंसराज 'सुमन'* 226
- **हिंदू धर्मशास्त्र और... :** *डॉ. अमिष वर्मा* 229
- **भूमंडलीकरण और... :** *हुलासी राम मीना* 234
- **हिंदी की आदिवासी... :** *डॉ. जसपाल कौर* 237
- **रामधारी सिंह... :** *डॉ. जायदासिकंदर शेख* 240
- **डॉ. रामविलास शर्मा... :** *डॉ. जितेश कुमार* 244
- **वर्तमान पत्रकारिता में... :** *कामरान वासे* 247
- **'पद्मावत' में प्रेम... :** *केदार मंडल* 251
- **आदिवासी कविताओं... :** *प्रो. खेमसिंह डहेरिया* 254
- **क्षेत्रीय मौखिक... :** *रंजन कुमार* 257
- **अपने स्वत्व को... :** *लक्ष्मी विश्नोई* 260
- **श्रीलाल शुक्ल... :** *सुधीर कुमार जोशी* 263
- **आत्मनिर्भर महिलाओं... :** *डॉ. बिजेंद्र कुमार* 267
- **श्यौराज सिंह बैचेन... :** *डॉ. मणिबेन पटेल* 270
- **भारतीय समाज में... :** *मनीष कुमार सिंह* 273
- **आधुनिक इतिहास में... :** *डॉ. मेघना शर्मा* 276
- **निर्गुण संतों की... :** *डॉ. प्रदीप कुमार'* 280
- **दलित और... :** *डॉ. नुरजाहान रहमातुल्लाह* 283
- **भारत में भाषाई... :** *ओमप्रकाश यादव* 286
- **मानवीय संस्कृति... :** *डॉ. प्रवीण कुमार* 290
- **कामाख्या शक्तिपीठ... :** *डॉ. प्रीति बैश्य* 296
- **'मोहन राकेश की... :** *प्रिया पाण्डेय* 299
- **हिंदी गजल... :** *डॉ. जियाउर रहमान जाफरी* 303
- **भीष्म साहनी का... :** *डॉ. राम किंकर पाण्डेय* 306
- **भारत की नई शिक्षा... :** *डॉ. रमेश कुमार* 310
- **श्रीलाल शुक्ल के... :** *रवीश कुमार यादव* 313
- **शैलेंद्र के भोजपुरी... :** *डॉ. संगीता राय* 315
- **रामनरेश त्रिपाठी... :** *संजीव कुमार पाण्डेय* 319
- **सूर्यकांत त्रिपाठी... :** *सरिता कुमारी* 322
- **मृदुला गर्ग के... :** *डॉ. सविता डहेरिया* 325
- **मोहन राकेश की... :** *डॉ. सुनील कुमार सुधांशु* 331
- **मीडिया में दलितों का... :** *डॉ. स्वर्ण सुमन* 334
- **डॉ. कुँअर बेचैन की... :** *तेज प्रताप* 340
- **जनजातीय.. :** *डॉ. उमेश कुमार पाण्डेय* 344
- **हिंदी दलित कविता... :** *विजय कुमार* 348
- **आधुनिक हिंदी... :** *विकास कुमार सिंह* 351
- **हिंदी साहित्य में... :** *विनय कुमार पाठक* 354
- **वैश्वीकरण और... :** *मुरली मनोहर भट्ट* 357
- **सुभद्रा कुमारी... :** *अनिता उपाध्याय* 360
- **हिंदी रंगमंच की... :** *डॉ आशा-डॉ. अनिल शर्मा* 363
- **जनमाध्यम के रूप... :** *डॉ. योगेश कुमार गुप्ता* 367
- **परंपराओं और... :** *डॉ. नीरव अडालजा* 372
- **हिंदी कथा साहित्य... :** *प्रियंका कुमारी गर्ग* 377
- **वैश्वीकरण की दौड़... :** *डॉ. कमलेश कुमारी* 381
- **'रामचरितमानस' में... :** *डॉ. हेमवती शर्मा* 385
- **रघुवीर सहाय के... :** *प्रतिभा देवी* 387
- **भारतीय संस्कृति बनाम... :** *डॉ. स्वाति श्वेता* 390
- **अनौपचारिक... :** *मुकेश कुमार मीना-विनोद सेन* 394
- **इतिहास शिक्षण में... :** *डॉ. अजीत कुमार बोहत* 398
- **परंपरागत नृत्य कलाओं... :** *डॉ. दिलावर सिंह* 401
- **राष्ट्रीय शिक्षा... :** *मोनिका कौल-ईश्वर सिंह* 405
- **सामाजिक माध्यमों... :** *डॉ. अनिल कुमार* 408
- **हिंदी सिनेमा... :** *डॉ. संतोष कु. सिंह* 412

जनमाध्यम के रूप में ‘कुंभ’ के लक्ष्य

डॉ. योगेश कुमार गुप्ता

शोधसार

यह एक सुखद संयोग है कि भारतीय दृष्टि से अब भारत को समझने की कोशिश की जा रही है। निश्चय ही इस विमर्श से भारत अपने गौरवपूर्ण अतीत को संजोकर नए पथ का सृजन करेगा। भारत की आत्मा को समझना है, तो उसे राजनीति अथवा अर्थनीति के चश्मे से न देखकर सांस्कृतिक दृष्टिकोण से देखना होगा। भारतीयता की अभिव्यक्ति राजनीति के द्वारा न होकर उसकी संस्कृति के द्वारा ही होगी तभी हम पुनः भारत की प्रतिष्ठा को विश्व में स्थापित कर पाएँगे। इसी भावना और विचार में भारत की एकता एवं अखंडता बनी रह सकती है। तभी भारत परम वैभव को प्राप्त कर सकता है। विश्व के अनेक शिक्षाविदों, दार्शनिकों, वैज्ञानिकों और प्रतिभाओं ने भारत के सामर्थ्य को सिद्ध किया है। किसी ने इसे ज्ञान की भूमि कहा है तो किसी ने मोक्ष की, किसी ने इसे सभ्यता का मूल कहा है तो किसी ने इसे भाषाओं की जननी, किसी ने यहाँ आत्मिक पिपासा बुझाई है तो कोई यहाँ के वैभव से चमत्कृत हुआ है, कोई इसे मानवता का पालन मानता है तो किसी ने इसे संस्कृतियों का संगीत कहा है। तप, ज्ञान, योग, ध्यान, सत्संग,यज्ञ, भजन, कीर्तन, कुंभ तीर्थ, देवालय और विश्व मंगल के शुभ मानवीय कर्म एवं भावों से भारतीय समाज का निर्माण हुआ है। इसी से पूरा भूमंडल भारत की ओर आकर्षित होता रहा है और होता रहेगा। ‘वसुधैव कुटुंबकम’ को चरितार्थ करने वाली हमारी भारतीय संस्कृति ही है।भारतीय संस्कृति की यही विकिरण ऊर्जा ही हमारी चिंतन परंपरा की थाती है। भारतीय चिंतन का आधार हमारी युगों पुरानी संस्कृति है। सांस्कृतिक चिंतन एक आध्यात्मिक अवधारणा है और यही है–भारत का वैशिष्ट्य। राष्ट्र का आधार हमारी संस्कृति और विरासत है। हमारे लिए ऐसे राष्ट्रवाद का कोई अर्थ नहीं जो हमें वेदों, पुराणों, रामायण, महाभारत और असंख्य राष्ट्रीय अधिनायकों से अलग करता हो।

कुंभ की कल्पना मात्र मेले की नहीं है अपितु यह बहुउद्देशीय परियोजना है। जिसका सबसे बड़ा उद्देश्य महासंवाद स्थापित करना है। कुंभ मूलतः ज्ञान प्रसाद का आयोजन है। विद्वतजन परस्पर विचार-विमर्श से सर्वश्रेष्ठ विचार प्राप्ति का प्रयास करते हैं। वहीं सामान्य जन ज्ञान परंपरा के विविध विचारों से परिचित होते हैं। राजा से लेकर रंक तक आयोजन में सम्मिलित होते हैं। बारह व छह वर्षों की लंबी अवधि के कारण समाज में पर्याप्त बदलाव दिखाई देने लगते हैं। आयु परिपक्व होते होते विचार भी परिपक्व होने लगते हैं। सभ्यता और संस्कृति के विकास के साथ ही शिक्षित और सुसंस्कृत जन समुदाय ने संचार कला के आधार पर समय की माँग को ध्यान में रखते हुए अपना संदेश दूसरों तक पहुँचाने के लिए अनेक साधनों एवं माध्यमों को विकसित कर लिया। इन साधनों एवं माध्यमों को जनमाध्यम कहा गया। प्राचीन काल से ही ये जनमाध्यम संस्कृतियों के विकास और विस्तार में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। कुंभ विश्व का सर्वश्रेष्ठ सांस्कृतिक किस्म का धार्मिक आयोजन है। इस शोध पत्र में एक स्वस्थ सांस्कृतिक छवि निर्मित करने में कुंभ को एक जनमाध्यम के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तावना

वैश्विक स्तर के बौद्धिक वर्ग में प्रमाणित हो चुका है कि दक्षिण एशिया के जिस भाग को वृहद भारतवर्ष कहा जाता है, इस भूमि पर कम से कम पाँच हजार वर्ष पूर्व उत्कृष्ट सभ्यता का उद्‌गम हुआ था। प्राचीन ग्रंथों के आधार पर कहा जा सकता है कि उस समय के समाज में ज्ञान विज्ञान एवं कलाओं को समझने और परखने का पूरा विवेक जागृत था। भारतीय ऋषि-मुनियों ने न केवल प्रकृति के नियमों को समझा बल्कि उन्हीं नियमों के अनुसार मानव जीवन का दर्शन भी प्रस्तुत किया। सैकड़ों वर्षों तक भारत के समाज ने उस प्रकृतिबद्ध जीवन को जिया था। पदार्थ की प्रकृति, प्रकृति के नियम, मानव व्यवहार का मनोविज्ञान, अंतरिक्ष में ग्रहों की गति और संचार इत्यादि सभी क्षेत्रों में प्रमाणिक ज्ञान-विज्ञान उपलब्ध है। अंतरिक्ष में विभिन्न ग्रहों और नक्षत्रों की निरंतर बदलती स्थितियों का सौ प्रतिशत तथ्यात्मक आंकलन करने की विधियाँ भी उस समय उपलब्धि थीं। इन आकाशीय खंडों का पृथ्वी के जल और थल पर ऊर्जात्मक प्रभावों का ज्ञान उस समय के वैज्ञानिकों को पूर्णरूप से था। नक्षत्रों की इन्हीं गणनाओं के आधार पर उस समय के समाज ने कुंभ की प्रथा का निर्माण किया।

कुंभ को ऋषि-मुनियों ने बाह्य ऊर्जा को आध्यात्मिक शक्तियों में परिवर्तित करने का भी उपाय बनाया। कुंभ के समय तपस्वी ऐसे स्थानों पर एकत्रित होते हैं,

जहाँ ऊर्जा का केंद्रीकरण होता है।[1] वर्तमान विज्ञान के आधार पर जब मनुष्य के मन में संचार की भावना का विकास हुआ तो सर्वप्रथम उसने अपनी संस्कृति को बाह्य जगत की संस्कृति से एवं बाह्य जगत की संस्कृति को अपने समूह से परिचित कराने का काम किया। यह कहना कठिन है कि सृष्टि में पहले संस्कृति का विकास हुआ या संचार का, किंतु इतना अवश्य है कि दोनों ही अन्योन्याश्रित हैं।संचार या जनसंचार विचारों, सूचनाओं, उत्प्रेरक संकेतों के आदान-प्रदान से ही हमारे समग्र जीवन-मूल्यों और संस्कृति की संरचना होती है। जनमाध्यम समाजीकरण का महत्त्वपूर्ण माध्यम है। समाजीकरण की सभी स्थितियों में जनमाध्यमों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। मानव सामाजिक प्राणी तब बनता है जब वह मौखिक, परंपरागत या इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों द्वारा सांस्कृतिक मूल्यों और व्यवहारों को सीख कर अपना लेता है। जनमाध्यम परंपरागत मान्यताओं को पुष्ट कर सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों पर पैनी दृष्टि रखते हैं। जनमाध्यम मनोरंजन और विकास का संदेश देकर संस्कृति के निर्माण में सहायक हैं। जन माध्यमों का बाहुल्य सांस्कृतिक आदान-प्रदान को तीव्र करता है, जो सांस्कृतिक विकास का सूत्रधार है। आधुनिक युग में जनमाध्यम जीवन का एक अभिन्न अंग बन गए हैं। वे अनेक साहित्यिक, सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रसारक व विश्लेषक हैं।[2] भारत की धरती पर लगने वाला 'कुंभ महामेला' जनसंचार का एक प्रकार है, जिसने जन-जीवन में सांस्कृतिक छवि को विकसित किया है।

कुंभ जैसे महापर्व का आध्यात्मिक ही नहीं बल्कि सामाजिक एवं राष्ट्रीय महत्त्व भी है। हमारा भारत जो महानगरों एवं नगरों से अधिक गांवों में बसता है, वहाँ के परिवेश में पलने वालों के लिए भी कुंभ अपनी उपयोगिता सतत सिद्ध करता रहा है। कुंभ के माध्यम से समाज के हर वर्ग में परिवर्तन लाने के लिए, प्रत्येक वर्ग के साथ न्याय करने के लिए, संपन्नता और विपन्नता का भेद मिटाने के लिए, समता और समरसता को परिभाषित करने के लिए, राष्ट्रवाद व समाजवाद का शंखनाद करते हुए शिक्षा, स्वास्थ्य और धर्म को अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति तक सरलतम तरीके से पहुँचा कर परिवर्तन के स्वरूप सामने लाने की आवश्यकता है।

कुंभ महापर्व सनातन संस्कृति के उद्भव का भी माध्यम है। सनातन संस्कृति की व्यापकता को समझने के लिए 'वसुधैव कुटुंबकम्' की अवधारणा तथा 'सर्वे भवंतु सुखिनः' की प्रार्थना का उदाहरण ही पर्याप्त है। एक और जहाँ विश्व में अनेक प्राचीन और नवीन संस्कृतियाँ विद्यमान हैं, कई संस्कृतियाँ समय-समय पर उत्पन्न हुई और काल के गाल में समा गई। वहीं सनातन संस्कृति आज भी अपने मूल रूप में विद्यमान है। यद्यपि इस संस्कृति की आत्मा पर विकृतियों का आवरण चढ़ा हुआ दिखाई देता है, तथापि इसकी जीवंतता में कोई कमी नहीं आई है। जहाँ तक आवरण की बात है, तो इस आवरण को उतारने हेतु प्रयास सदैव होते ही रहे हैं, इसी कारण यह आज के ऐसे युग में भी चौतन्यता लिए हुए विद्यमान है, जिस युग में अन्य संस्कृतियाँ केवल आत्म-केंद्रित होकर हिंसा के क्रूरतम स्वरूप के साथ मात्र अपने मत की स्थापना में लगी हुई हैं और विश्व के साथ ही संपूर्ण मानवता के लिए भी घोर संकट बन गई हैं। ऐसे समय में सनातन संस्कृति की विश्व-पटल पर भूमिका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि अन्य संस्कृतियाँ केवल मानवीय मूल्यों की बात करती हैं और उसे अपनी महानता समझती हैं, वही सनातन संस्कृति मानव और मानवता से भी आगे, संपूर्ण विश्व के मंगल की कामना करती है।[3]

समाजशास्त्रियों ने संस्कृति को समाज की धरोहर या सामाजिक विरासत माना है। समाज द्वारा निर्मित भौतिक और अभौतिक दोनों पक्षों को संस्कृति में सम्मिलित करते हुए रॉबर्ट पीरस्टीड ने लिखा है, ''संस्कृति वह संपूर्ण जटिलता है, जिसमें ये सभी वस्तुएँ सम्मिलित हैं, जिन पर हम विचार करते हैं, कार्य करते हैं और समाज के सदस्य होने के नाते अपने पास रखते हैं।'' पीरस्टीड आगे कहते हैं, ''संस्कृति के अंतर्गत हम जीवन जीने या कार्य करने एवं विचार करने के उन सभी तरीकों को शामिल करते हैं, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होते हैं और जो समाज के स्वीकृत अंग बन चुके हैं।''

मैकाइबर एवं पेज ने लिखा है कि, ''संस्कृति मूल्यों, शैलियों व भावात्मक अभियानों का संसार है। यह हमारे रहने और सोचने के ढंग, कार्यकलापों, कला-साहित्य, धर्म, मनोरंजन एवं आनंद में हमारी प्रकृति की अभिव्यक्ति है।''

संस्कृति की कोई सर्वमान्य परिभाषा देना कठिन है। इसका मुख्य कारण संस्कृति शब्द की व्यापकता है। वास्तव में एक समाज विशेष के संपूर्ण व्यवहार, प्रतिमानों तथा समग्र जीवन जीने की पद्धति ही मिलकर संस्कृति का निर्माण करते हैं। व्यक्तियों के सामूहिक जीवन जीने के साथ संस्कृति का भी विकास होता है।[4]

जनमाध्यम के रूप में 'कुंभ' के सांस्कृतिक लक्ष्य

संस्कृति और संचार दोनों की विषय वस्तु मनुष्य ही है। संचार के लिए माध्यम की आवश्यकता होती है। संचार के प्रचलित माध्यम मानव सभ्यता एवं संस्कृति के विकास क्रम को दर्शाते हैं। संस्कृति निर्माण और विकास की प्रक्रिया जन-माध्यमों द्वारा पूर्ण होती है। संस्कृति सीखी जाती है और पीढ़ी दर पीढ़ी इसका हस्तांतरण होता रहता है। सीखने और हस्तांतरण की प्रक्रिया मौखिक संचार द्वारा की जाती है। आज संस्कृति से जुड़ी समस्याएँ अत्यंत जटिल हैं। विकास के सांस्कृतिक आयाम की अनदेखी की जाती है। विकास तभी संभव है जब संस्कृति के साथ जीवन के अन्य विषयों को भी उससे संबंधित करके अध्ययन किया जाए। 'संस्कृयते इति संस्कृतिः' अर्थात जो सुसंस्कृत कर दे,परिष्कृत कर दे, जो शोधन करे, वही 'संस्कृति' है। तात्पर्य यह है की जो जीवन मूल्य, जीवन शैली, आचार-विचार और संस्कार जीवन को सही दिशा, उचित विकास और परिपूर्णता का आयाम प्रदान करें, वही संस्कृति है।[5] कुंभ बतौर जनमाध्यम द्वारा संस्कृति का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इस महात्म्य से हमारे

पूर्व आचार्यों ने सारे देश की संस्कृति को एक सूत्र में बांधने का प्रयास किया था। चाहे दक्षिण हो या उत्तर, पूर्व हो या पश्चिम, राजनीतिक सत्ता अपने-अपने काल में इस कुंभ की व्यवस्था बनाकर समाज की सेवा करती आई है। कुंभ पर्व को मनाने का तात्पर्य सामाजिक एकता से जुड़ा है। समाज को अपनी संस्कृति के साथ-साथ जब तक अपने देश की भौगोलिकता, सामाजिकता, ऐतिहासिकता और उसके समन्वय का बोध न हो और आपस में सभी लोग अपने विचारों का आदान-प्रदान न करें, तब तक कुंभ पर्व के उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो सकती। वैचारिक आदान-प्रदान के पश्चात् जो अमृत मथ कर निकलता है, वास्तविक जीवन में उसका आचरण होते ही कुंभ महापर्व की यह प्राचीन परंपरा सार्थक होती है।[6] कुंभ की ऐतिहासिक परंपरा में देश व समाज को सन्मार्ग पर लाने के लिए ऋषियों, महर्षियों के विचार सदैव आदरणीय एवं उपयोगी रहे हैं। आर्यावर्त के पुराने नक्शे में शामिल देश भी तब महाकुंभ में एकत्र होकर समाज के जरूरी नीति नियमों को जानने के लिए ऋषियों की ओर ही देखते थे और उनके पालन के लिए प्रेरित होते थे। हर बारह साल के बाद देश के विभिन्न स्थलों पर शंकराचार्यों के नेतृत्व में हमारे मनीषी देश की नीति और नियम तय कर समाज व्यवस्था का संचालन करते आए हैं। ये नियम सनातन परंपरा को अक्षुण्ण रखने के साथ-साथ समय की माँग के अनुसार भी बनते थे।

आज मानव समाज के सामने जो समस्याएँ चुनौती बनकर खड़ी हैं, उनमें आतंकवाद, भ्रष्टाचार, हिंसा, देशद्रोह और मानव शरीर एवं समाज को जर्जर करने वाली समस्या प्रदूषण प्रमुख हैं। ज्ञान, भक्ति, आस्था, श्रद्धा के साथ साथ जनमानस में सामाजिक एवं नैतिक चेतना जागृत करने वाले सांस्कृतिक अनुष्ठान कुंभ में एक संपूर्ण सांगोपांग विमर्श दृष्टिगत होता है।[7] लोक परंपरा पौराणिक कथाओं, मिथकों, कल्पनाओं, संकेतों एवम प्रतीकों के माध्यम से संस्कृति को ऊर्जावान बनाती है। वैविध्य रूप में लोक व शास्त्र की परंपराओं का सुंदर मेल वहाँ दिखाई देता है। एक सामाजिक समूह के लोगों के लिए उनकी संस्कृति ही उनकी पहचान होती है। अपनी सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करने और उसके प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न माध्यमों की आवश्यकता होती है। संस्कृति और संचार एक दूसरे के पूरक हैं और मानवीय विकास के साधन हैं। कुंभ मेला संचार का एक अद्भुत माध्यम है। भारत के कोने-कोने में इस धार्मिक मेले का आह्वान पहुँच जाता है। असंख्य नर-नारी आकुल भाव से इस धर्मामृत का आस्वादन करने चले आते हैं। नवशक्ति के प्रबल जागरण से राष्ट्र शक्ति की प्रत्येक धमनी में विशेष धर्म-धारा उद्दाम गति से प्रवाहित होने लगती है।[8]

कुंभ का वैचारिक मंथन

सागर मंथन से अमृत और विष दोनों ही निकले थे। हर मंथन का यही परिणाम होता है। विष त्याज्य होता है क्योंकि वह समाज के लिए अहितकारी होता है। समाज के अंदर से विष निकल जाए तो एक स्वस्थ समाज का निर्माण होता है। इसीलिए समय-समय पर मंथन अनिवार्य हो जाता है, जिससे शुद्ध, प्रफुल्ल एवं ऊर्जावान समाज की प्राप्ति होती है। सागर मंथन अथवा समाज मंथन से जो अमृत निकलता है उसे समग्र समाज में पहुँचाना भी जरूरी होता है। तभी संपूर्ण समाज का शुद्धिकरण संभव है। भारतीय इतिहास में देवों और दैत्यों के सागर मंथन की घटना इस दृष्टि से प्रासंगिक है। मंथन से निकला अमृत जब नासिक, उज्जैन, प्रयागराज और हरिद्वार में पहुँचा, तो संपूर्ण मानव समाज स्वाभाविक रूप से उसकी प्राप्ति के लिए लालायित हो उठा। कालांतर में यही स्थान समाज के वैचारिक मंथन के केंद्र भी बन गए। कुंभ के अवसर पर देशभर से लाखों की संख्या में साधारणजन और अपने-अपने क्षेत्रों के विद्वान इन स्थानों पर आ जुटते हैं, लंबी मंत्रणाएँ होती हैं–संतों की मंत्रणाएँ, दार्शनिकों की मंत्रणाएँ, आयुर्वेद से जुड़े विद्वानों की मंत्रणाएँ, खगोलविज्ञानियों की मंत्रणाएँ। सब अपने-अपने क्षेत्र के ज्ञान विज्ञान का आदान-प्रदान करते हैं। मंथन से निकला ज्ञान रूपी अमृत लेकर साधारण जन प्रफुल्ल भाव से अपने-अपने घर लौटता है। कुंभ ने भारत के वैचारिक आंदोलन को आगे बढ़ाने में सहायता की है, साथ में राष्ट्रीय एकता के आंतरिक सूत्रों को पुष्ट करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। निश्चित समय के बाद लोग कुंभ स्थलों पर एकत्रित होते हैं। हर छह साल बाद अर्द्धकुंभ आता है जिसमें कुछ स्थानीय और कुछ बड़े प्रश्नों पर विचार किया जाता है। हर बारह साल के अंतराल के बाद आता है कुंभ, जिसमें हिमाचल से कन्याकुमारी तक, गुजरात से मेघालय तक के लोग एकत्रित होते हैं और राष्ट्र से जुड़े सभी प्रश्नों पर अनेक दिन तक मंथन चलता रहता है। फिर सैकड़ों साल बाद महाकुंभ का योग होता है। कुंभ में विचाराधीन प्रश्न भी दूरगामी होते हैं। ये प्रश्न राष्ट्र की सीमाओं को भी लांघ जाते हैं। भारतीय चिंतन का आधार 'वसुधैव कुटुंबकम्' है तो यह तो स्वाभाविक ही है। लेकिन अनेक बार ऐसा भी होता है कि समाज की स्थिति इतनी विकट हो जाती है और प्रश्न इतने तीखे हो जाते हैं कि उनके दंश से समाज का रस ही सूखने लगता है। तब मंथन के लिए किसी कुंभ के योग की प्रतीक्षा नहीं की जाती है। शास्त्र इसे आपातकाल कहते हैं और आपातकाल में आपद्धर्म ही चलता है। इसीलिए ऐसे अवसर पर आपद्कुंभ का आयोजन होता है। जिसके मंथन से निकला अमृत उस संकट का निवारण करता है। 2021 में हरिद्वार में कुंभ का योग पड़ा है। इस कुंभ में भी राष्ट्र के सम्मुख चुनौती दे रहे प्रश्नों पर गहरा मंथन हुआ। कुंभ के अवसर पर किया गया यह मंथन भारत को एक नई दिशा देगा और उसे एक नई ऊर्जा प्रदान करेगा। उसका मुख्य कारण यह है कि मंथन के निष्कर्षों को जनसमर्थन हासिल है और जन-जन की चेतना ही भारत की मूल शक्ति है। जिसे हम कुंभ के मेले के नाम से जानते हैं वही कभी धर्म संसद के नाम से पहचाना जाने वाला बौद्धिक समागम (इंटेलेक्चुअल मीटिंग) होता था। बारह और छह वर्षों के अंतराल के बाद की परिवर्तित परिस्थितियों में भारत के किस क्षेत्र में क्या-क्या परिवर्तन आया है, इसका अध्ययन उस धर्म संसद में रखा जाता था। आवश्यकता के अनुरूप

नई मान्यताएँ एवं मिथक बनते और शास्त्रों में अध्यात्म विषय पर संशोधन किया जाता एवं नए विधि-विधान शामिल करके जनसाधारण वर्ग, शासक वर्ग और व्यापारिक वर्ग के लिए बनाए गए धर्मों में कर्तव्य व अधिकारों की संशोधित व संवर्धित व्याख्या लिखी जाती। यदि इसे संविधान संशोधन के रूप में देखा जाए तो अंतर सिर्फ इतना है कि राष्ट्रीय संविधान में अधिकार दिए जाते हैं और शास्त्रों में कर्तव्यों के बारे में बताया जाता है। ''अधिकार टकराव को जन्म देता है जबकि कर्तव्य निजी अनुशासन होता है।''[9]

सांस्कृतिक अभिरुचि के विकास में सहायक 'कुंभ मेला'

जनमाध्यमों ने हमारी सांस्कृतिक अभिरुचियों को विकसित किया है। सांस्कृतिक अभिरुचियों के अंतर्गत धर्म, नीति, दर्शन, समाज, साहित्य एवं मनोरंजन के साधन आते हैं। जन माध्यमों ने बौद्धिक, भौतिक एवं वैज्ञानिक चेतना को सांस्कृतिक आवरण में लपेट दिया है। विश्व का सबसे बड़ा मेला उत्तर प्रदेश के प्रयाग में लगता है, कभी कुंभ के नाम से, कभी अर्द्धकुंभ के नाम से। भारत के सांस्कृतिक विकास में प्रारंभ से ही निरंतरता बनी रही है। इसी निरंतरता के फलस्वरुप भारत में हिमालय से रामेश्वरम् तक तथा द्वारका से भारत म्यांमार की सीमा तक सांस्कृतिक एकता के सूत्र सतत संचरित रहे हैं। इस सांस्कृतिक एकता के साथ-साथ क्षेत्रीय भिन्नता भी सदा से विद्यमान थी। आज की शब्दावली में भारत आदिकाल से ही एक सांस्कृतिक संघ बन गया था। प्राचीन हिंदू सामाजिक विचारकों और मनीषियों ने राष्ट्रीय एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए अनेक प्रकार के धार्मिक और सामाजिक प्रबंध किए थे। जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्रीयता की एक ऐसी अंतःसलिला श्रद्धा भाव से बह निकली, जिसने अनेक शताब्दियों तक संपूर्ण देश को एक सूत्र में पिरोए रखा। राष्ट्रीय एकता के इन उपायों में तीर्थों का चयन और उनकी यात्राओं का प्रबंध एक सबसे महत्त्वपूर्ण उपाय रहा है। जहाँ राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाओं ने देश को एकीकृत अथवा खंडित करने का कार्य किया है, वहीं इन यात्राओं ने धार्मिक विश्वासों पर आधारित शाश्वत मूल्यों से युक्त एकता के सूत्र में पिरोया है। चतुर राजनीतिज्ञों द्वारा भारत की एकता प्राप्त करने के प्रयासों से बहुत पहले ही तीर्थयात्रियों के चरणों ने अखंड हिंदुस्तान की संरचना कर दी थी। तीर्थयात्रियों द्वारा तीर्थ यात्रा करते समय तीर्थ स्थलों से संबंधित महापुरुषों, ऋषि-मुनियों एवं वीरों की स्मृतियों को जगाए रखना देश के समस्त भूभाग के प्रति लगाव का सूचक था। इस कार्य में हमारे ऋषि सफल भी रहे क्योंकि आज भी अनेक वर्षों की दासता, सांस्कृतिक आक्रमण और घात-प्रतिघातों के बीच भी उन स्थलों के लगाव से जन्मी राष्ट्रीय एकता की भावना यथावत विद्यमान है।

2021 का कुंभ मेला कई दृष्टियों से अनूठा है। यह मात्र किसी जाति का मेला नहीं है, अपितु संपूर्ण भारत को उसकी मूल आत्मा से एक साथ देखने का प्रयास है। इसमें भारत का औसत गृहस्थ उसी संकल्प और मनोयोग से सम्मिलित होता है, जिस तरह साधु-समाज स्वाध्याय, चिंतन और प्रतिष्ठा की मान्यता के लिए यहाँ एकत्र होता है। यह देश का सबसे बड़ा गौरवपूर्ण सांस्कृतिक महोत्सव है। देश के विभिन्न स्थानों पर रहने वाले लोग जो देश की प्राचीन सनातन एवं धर्म में विश्वास करते हैं, वे इस अवसर पर एकजुट होकर आपसी सत्संग और विचार विनिमय से अपना और दूसरों का ज्ञान संवर्धन करके रूढ़ियों को छोड़ने और समाज की स्वस्थ परंपराओं को चलाए रखने का प्रयत्न करते हैं, ताकि ये परंपराएँ समयानुकूल होकर कल्याणकारी बनें।

कुंभ मेला प्राचीन काल से ही भारत के सामूहिक जीवन की महत्त्वपूर्ण विशेषता रहा है। यह भारतीय संस्कृति की सामूहिक पूजा एवं आराधना को अभिव्यक्त करता है। कुंभ पर्व पर लगने वाला मेला भारत का अतिविशिष्ट स्नान पर्व है। कुंभ मेले की तरह भारत में ऐसा कोई मेला नहीं है जो संपूर्ण हिंदू संस्कृति को गहरे रूप में प्रभावित करता हो। मेले जनसंचार का बड़ा माध्यम हैं। प्राचीन काल में मेले साझा मंच थे जहाँ कुछ देर के लिए ही सही जाति, धर्म और लिंग से ऊपर उठकर समाज मुक्त रूप से एक साथ सांस लेता था। मेले परंपरागत समाज में अभिव्यक्ति की आजादी के मान्य तरीके थे। साधु, संत, चारण, भाट, साहित्य-सभा, समिति, शास्त्रार्थ, राजा के दूत और संदेशवाहक प्रमुख रुप से संचार माध्यमों का काम करते थे। संस्कृत ग्रंथों में वैदिककालीन ब्राह्मणों द्वारा देवताओं का ऋषियों के रूप में धरती पर निवास करने का उल्लेख मिलता है। ये ऋषि-मुनि कुंभ जैसे आयोजन में एकत्रित होकर नैतिक एवं धार्मिक कथाएँ सुनाया करते थे। ये धार्मिक उपदेशक संचारक के रूप में काम करते थे। ये संचारक मानव मात्र में प्रेम, सदाचार और सत्य मार्ग पर चलने का उपदेश देते थे। लोग श्रद्धापूर्वक इनके उपदेशों को आदेशों के रूप में स्वीकार करते थे।

भारत में मेले और पर्व एक तरह से परंपरागत संचार के साधन हैं। कुंभ मेले के आयोजन के पीछे धार्मिक भावना के अलावा वैचारिक संचार का भी उद्देश्य निहित है। हिंदू तीर्थस्थलों की स्थापना भी एकता और अखंडता की दृष्टि से की गई थी। शंकराचार्य ने चारों दिशाओं में चार मठों की स्थापना करके देश को एक सूत्र में बांधने का प्रयास किया था और अपने इस उद्देश्य में सफल भी हुए थे। इस प्रकार तीर्थस्थलों की यात्रा के माध्यम से जहाँ तीर्थयात्री अलौकिक पुण्य प्राप्त करते थे, वहीं पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण चारों दिशाओं में देश के विभिन्न भागों की संस्कृति, भाषा, वेशभूषा एवं परंपरा इत्यादि से परिचित होते थे, साथ ही दूसरों को भी परिचित कराते थे। इस तरह से तीर्थयात्राएँ संचार का माध्यम बनती थीं।

प्राचीन कालीन परंपराएँ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक विरासत के रूप में वर्तमान तक पहुँच सकी हैं। इनमें काल एवं परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन भी हुआ है। सत्यनारायण कथा, जागरण, रामायण पाठ, श्रीमद् भागवत एवं रामलीलाएँ इत्यादि परंपरागत तरीकों से चली आने वाली कथाएँ तथा उक्तियों की प्रधानता आज भी हमारे समाज में

मौजूद है। यज्ञ के माध्यम से राजा अपनी सत्ता और व्यवस्था का संदेश प्रेषित करता था। प्राचीन संचार व्यवस्था में ही आधुनिक संचार की प्रक्रिया निहित है। वार्ता एवं आकाशवाणी जैसे संचार के रूप प्राचीन ग्रंथों में वर्णित हैं। वार्ता से अभिप्राय उपदेश, वाद-विवाद इत्यादि से है जो कि प्राचीन भारत में एक देवता या ऋषि के द्वारा दूसरे को दिया जाता था। परंपरागत संचार का उद्देश्य व्यावसायिक ना होकर संप्रेषण और मनोरंजन था और वह पूजा की पद्धति से भी जुड़ा था। यह सामाजिक गतिविधियों से संबंधित था और समाज को दिशा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता था। सामाजिक दायित्व और एकता की स्थापना में परंपरागत संचार माध्यमों का योगदान अभूतपूर्व रहा है। पारंपरिक संचार माध्यमों का विस्तार आधुनिक संचार माध्यमों तक है। जनसंचार के पारंपरिक माध्यम जैसे कुंभ मेला लोगों के धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक जीवन के अत्यंत करीब होते हैं। इनकी विषय वस्तु जन सामान्य की परंपराओं और रीति-रिवाजों से संबंधित होती है। कुंभ नवाचारों के प्रचार का माध्यम बन गया है।[10]

निष्कर्ष

भारत सिर्फ एक देश का नाम नहीं है। वह नाम है एक सनातन परंपरा का, संस्कृति का, विश्वास का, आस्था का और कभी ना क्षरित होने वाली धारा का। दुनिया में भारत का धर्म, भारत की परिवार कल्पना, सुख और आनंद से जीने की शैली, भारत का योग, भारतीय आयुर्वेद एवं औषधि, प्रकृति से संवाद करती और उसके संरक्षण पर विचार रखने वाली हमारी जीवनशैली आज पूरी दुनिया में सम्मान की नजर से देखी जा रही है। भारतीय ज्ञान परंपरा के रहस्य और हमारी विरासतें आज दुनिया के सामने एक वैकल्पिक दर्शन के रूप में खड़ी हैं। एक ऐसी दुनिया जिसने वैभव के शिखर तो छुए किंतु 'आनंद', 'सुख' और 'शांति' उसके जीवन से दूर चले गए। ऐसी दुनिया भारत के विषय में जानना चाहती है कि आखिर भारतीय दर्शन में ऐसा क्या है जो उसने वैभव के बीच भी 'आनंद', 'सुख' और 'शांति' हासिल की! यह देने का सुख है। बांटने का सुख है। दान का आनंद है। जीवन की सहजता का आनंद है। प्रकृति के साथ संवाद का सुख है। वास्तव में मेलों को हम महज भीड़ का जमावड़ा ही समझते हैं। लेकिन संगम की रेती पर लगने वाले कुंभ में संचार के कारगर औजारों से रूबरू होने का मौका मिलता है। कहीं प्रवचन हो रहा है तो कहीं आमजन को सामाजिकता की शिक्षा मिल रही है। कई शिविरों में प्रकृति से संचार की कला सिखाई जा रही है, तो कहीं कल्पवासियों को अगले बारह साल तक जीने की कला सिखाई जा रही है। धार्मिक दृष्टि के अलावा कुंभ मेले में विभिन्न दिशाओं से भक्तों, श्रद्धालुओं, तीर्थयात्रियों के विचारों का पारस्परिक आदान-प्रदान एवं देश की प्रतिनिधि जनता के बीच नवीन कृतियों का विज्ञापन भावनात्मक एवं विचारात्मक एकता के सूत्र में कुंभ की भूमिका का परिचायक है एवं भारत और भारतीयता का बोध कराता है। दुनिया में पानी के किनारे बहुत से मेले लगते हैं। लेकिन कुंभ जैसा कोई नहीं। हालांकि पिछले साठ वर्षों में बहुत कुछ बदला है। बावजूद इसके यह सिलसिला हजारों वर्षों से बदस्तूर जारी है। छह बरस में अर्द्धकुंभ, बारह बरस में कुंभ और 144 वर्ष में महाकुंभ यह सभी आश्चर्यचकित करते हैं और मन में जिज्ञासा भी जगाते हैं कि आखिर कुंभ है क्या?

संदर्भ :

1. प्रो. कुठियाला, ब्रजकिशोर का लेख, 'महासंवादः कुंभ का मुख्य उद्देश्य', मीडिया मीमांसा, जनवरी- मार्च 2016, पृ. सं. 2
2. तिवारी, अर्जुन, जनसंचार समग्र, उपकार प्रकाशन, आगरा, पृ. सं. 8
3. गौतम, सिद्धार्थ, सनातन संस्कृति का महापर्व सिंहस्थ, प्रभात प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2016, पृ. सं. 125-126
4. UPRTOU के पत्रकारिता और जनसंचार-01 में परास्नातक, प्रमुख सांस्कृतिक अवधारणा-02 की अध्ययन सामग्री, पृ. सं. 6-7
5. UPRTOU के पत्रकारिता और जनसंचार-01 में परास्नातक, प्रमुख सांस्कृतिक अवधारणा-02 की अध्ययन सामग्री, पृ. सं. 17-18
6. चतुर्वेदी, संजय, 'कुंभ आस्था का प्रतीक', प्रभात प्रकाशन, पृ. सं. 15-16
7. चतुर्वेदी, संजय, 'मंथन का महापर्व', प्रभात प्रकाशन, प्रथम संस्करण
8. मित्र, डॉ. माला का लेख, 'जनमाध्यम, भारतीय संस्कृति और अस्मिता' www.prachhacc.com/2017/09
9. अग्निहोत्री, डॉ. कुलदीप का लेख, 'राष्ट्रीय एकता को पुष्ट करता है कुंभ का वैचारिक मंथन', प्रवक्ता डॉट कॉम
10. इलाहाबाद नगर के सतत विकास में पर्यटन की भूमिका, शोधगंगा डॉट कॉम, पृ. सं. 215-216

सहायक आचार्य, नव मीडिया विभाग,
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय,
धर्मशाला